आपातकाल में सृजन फुलवारी

आरती डोंगरे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

आरती डोंगरे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-140-4
संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण - 2020, आरती डोंगरे
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY AARTI DONGRE
वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	रंग फागुनी हुई	6
2.	नंदन	7
3.	प्रेम गीत गाइए	8
4.	नारी ने संसार रचाया	10
5.	लौट आओ	12
6.	धैर्य	13
7.	भुला दो सभी गम	14
8.	क्या उसे ख़ौफ़ है	15
9.	जगजननी	16
10.	अरदास	16
11.	रात भर नींद में	17
12.	उजला घर संसार	18
13.	भोर हुई	19
14.	दीप जलाओ	20
15.	पीर सुनो बनवारी	21
16.	आगे बढ़ते जाना	22

रंग फागुनी हुई

रंग फागुनी हुई धरा, खिलने लगी प्रीत ये असीम।
बाँवरा मयूर मन हुआ, नाच रही लता बन अफीम।

बौरा कर अमराई ने, वन वसंत गंध भर दिए।
केसरी पलाश ने सघन, चेतन सब अंश कर दिए।
गदराई यौवनी सुधा, देह लाज से गई है झीम।
रंग फागुनी हुई धरा .....।1।

थिरके धुन राग रंग भर, मतवाले युगल हाथ धर।
खुल गया अभेद द्वार भी, होठो के दंत द्वार पर।
रीझ गई सुंदरी हवा, डोल रहा दूर खड़ा नीम।
रंग फागुनी हुई धरा.....।2।

मल कर तन पर गुलाल को, नेह का निबंध लिख दिया।
प्रीत गान स्वर सरित में, कविता रस छंद भर दिया।
पोर पोर झूमने लगा, बरसा आनंद घन अजीम
रंग फागुनी हुई धरा.....।3।

बंशी की तान छेड़कर, सबका मन मोह हर लिया।
देह सुधी भूल के चली, निज का अवरोह कर लिया।
कृष्णमय हुई है राधिका, प्रीत जैसे हो महान भीम।
रंग फागुनी हुई धरा.....।4।

रंग फागुनी हुई धरा, खिलने लगी प्रीत ये असीम।
बाँवरा मयूर मन हुआ, नाच रही लता बन अफीम।।

नंदन

नंदन वो वसुदेव के, मात देवकी रूप।
जन्मे कारागार में, भादो मास अनूप।।
भादौ मास अनूप, उफनती यमुना धारा।
चले सूप रख नंद, प्रभु अब तेरा सहारा।।
हुआ कंस असहाय, देवकी करती वंदन।
रहे सुरक्षित बाल, रूप जो है यदुनंदन।1।

नंदन ये वैशाख के, मन में रख संतोष।
नहीं किसी से दोस्ती, नहीं बैर का कोष।।
नहीं बैर का कोष, रहे खुद से भरमाते।
सीधे-साधे जीव, अक्ल से मारे जाते।।
लोट लगाए राख, लाख मल दो तुम चंदन।
करते कभी ना घात, सुलभ वैशाखी नंदन।2।

प्रेम गीत गाइए

व्योम के प्रभात द्वार,
छेड़ते मृदंग तार,
भोर की वही बयार,
प्रेम गीत गाइए।

लाल है ललाम सेज,
पंकजा खिली सहेज,
गान है विहंग तेज,
योग ध्यान पाइये।

सार अंश वेद रूप,
ज्ञान का मिले स्वरूप,
साधना सधे अनूप,
चेतना जगाइये।

वारती धरा अगाध,
प्रेम पुंज मौन साध
भावना बहे निबाध
देवता मनाइये।।

नारी ने संसार रचाया

नारी ने संसार रचाया जीवन भार संभाला।
कण कण चेतन कर धरती का जीवन उसने पाला।

अपने अन्तस् में पनपाया अंकुर एक सलोना।
माटी बनकर सींच दिया फिर बनकर आप बिछौना।
रहा सकल संसार सदा ही इसके आगे बौना।
हुआ चिरन्तन त्याग समर्पण वैश्विक रूप निराला।
नारी ने संसार रचाया जीवन भार सम्भाला

रूप सरस श्रृंगार धारिणी मधुमय मद को पाया।
राधा मीरा बनी प्रीत का नवरस मधुर लुटाया।
शक्ति की अधिकाई बन गई दानव दलन कराया।
रही निरापद पीड़ाओं से सृष्टि को रंग डाला।
नारी ने संसार रचाया जीवन भार संभाला।

धीरज धरणी के सम जैसा सुख का छलके प्याला।
ममता प्रेम लुटाती पल पल संस्कारो की माला।
नही गर्व फिर भी अपने पर ओढ़े कर्म दुशाला।
सबला ये अनमोल धरोहर रोम रोम है हाला।
नारी ने संसार रचाया जीवन भार संभाला

नारी ने संसार रचाया जीवन भार संभाला।
कण कण चेतन कर धरती का जीवन उसने पाला।।

लौट आओ

तेरे दीदार को थमी आँखे।
लौट आओ के ढूँढती आँखे।

बेजुबाँ वो नही कहे कुछ भी।
राज खोलेगी बोलती आँखे।

मौन जज्बात दिल में ठहरे है।
आँसुओ से रही भरी आँखे।

कैफियत पूछते नही अब तो।
आहटों पर रही जमी आँखे।

दौर नफरत का हर कदम पर है।
प्यार को खोजती रही आँखे।

मुन्तजिर हूँ तेरी इनायत की।
ख्वाब में तुझको ढूँढती आँखे।

रंग जीवन के सब समाए है।
बस दुआ और बंदगी आँखे।

जल रही बस्तियाँ नही पूछो।
तीर,तलवार से घिरी आँखे।

"आरती" जब भी गुनगुनाती है।
है गजल और शायरी आँखे।।

धैर्य

स्वस्थ तन और मन,
से रहो निरोगी बन,
भक्ति युक्त साधना का,
सदा घट हो वरण।

धर्म कर्म का हो ध्यान,
पाप वासना निदान,
मात पिता का हो मान,
पूज्य ईश हो चरण।

शांति सदभाव रहे,
प्रीत का झुकाव रहे,
ममता की छाँव रहे,
दुर्गुणों का हो हरण।

मातृभू से प्यार रहे,
शौर्य शक्ति सार रहे,
प्राणी निर्विकार रहे,
धैर्य युक्त हो मरण।।

भुला दो सभी गम

भुला दो सभी गम तुम्हारी सखी हूँ,
तुम्हारे लिए ही सुनो मैं बनी हूँ।

वही धुन पुरानी मुझे फिर सुनाओ,
चलो स्वर की सरिता का सरगम सजाओ
मेरे साथ मिलकर जरा गुनगुनाएं,
वही राग जो मैं युगों से सुनी हूँ।

बनी हूँ तुम्हारी दीवानी लगन में
तपा नेह मेरा तुम्हारी अगन में
नहीं आज रोको बहकने लगी हूँ,
सजन गीत की वो कड़ी अनसुनी हूँ।

तुम्हारी छुअन से लगे साज सजने,
तुम्हारी महक से लगे मन महकने
मिलन ये अनोखा हुआ प्रीत में है
इसी नेह को धड़कनो में बुनी हूँ।

भुला दो सभी गम तुम्हारी सखी हूँ,
तुम्हारे लिए ही सुनो मैं बनी हूँ।

क्या उसे ख़ौफ़ है

क्या उसे ख़ौफ़ है जमाने का।
या बहाना हुआ रुलाने का।

राज लाखों छुपा रखे दिल में।
बस हूनर ही नहीं सुनाने का।

जिंदगी से नही शिकायत है।
हौसला अब भी है निभाने का।

ख्वाब में तुम जरा चले आओ।
ये नहीं खेल दिल लुभाने का।

आग ऐसी लगी जमाने में।
कुछ न घर में बचा दिखाने का।

मज़हबी दाँव ये सियासत के।
दौर नापाक है ज़माने का।

"आरती" फैसले मुकद्दर के।
गम नही कुछ फरेब खाने का।

जगजननी

जगजननी मैं करती वंदन, तुमको बारंबार।
जन्म मिले इस पुण्य धरा पर, है प्रणाम सौ बार।
शस्य श्यामला आँचल पावन, हरा भरा श्रृंगार।
अनेकता में एक संस्कृती, के दर्शन हर बार।

देव संत और ऋषियों के यह, जीवन का आधार।
वाणी में अमृत छलकाता, उपदेशों का सार।
वीर बाँकुरे करते तन-मन, अपना इस पर वार।
वेद और विज्ञान का मिलता, है इसमें भंडार।

कीर्ति जगत में फैले इसकी, जन गण मन का गान।
पूजित है कण कण माटी का, है अपना अभिमान।
जीवन इस पर मिला पुण्य से, परम् इसी को मान।
इसकी रक्षा हित हम कर दे, कई जनम बलिदान।

अरदास

जीवन का कुछ मोल नहीं
सब अर्थ प्रलाप में लीन रहे।
भूल गए अपनेपन को
निज के हित हेतु प्रवीन रहे।

दान नहीं सतकर्म नहीं
पशुता अपनाकर हीन रहे।
ज्ञानमयी वरदान मिला
फिर क्यों पथ पाप अधीन रहे।।

फागुन रंग भरा बिखरा
पिय आवन की अब आस लगी।
रूप निखार रही अपना
मन में भरने नव प्यास लगी।

देख गुलाब खिला मुख पे
करती सखि क्यों परिहास लगी।
साजन आन मिलो अब तो
सजनी करने अरदास लगी।।

रात भर नींद में

रात भर नींद में कुनमुनाते रहे।
ख्वाब में आपको हम बुलाते रहे।

छल कपट से भरे इस जहां में सनम।
सारे रिश्ते हमी तो निभाते रहे।

दर्द का साथ हमको मिला उम्रभर।
गम के लम्हात सब हम भुलाते रहे।

एक दरिया सा ठहरा रहा आँख में।
अश्क फिर भी सभी से छुपाते रहे।

दौर था मुफलिसी का मगर "आरती"।
प्रेम के हम खजाने लुटाते रहे।।

उजला घर संसार

खिल जाएंगे ज्योति सुमन सब दीप जले घर द्वार।
खुशियों से आँगन महकेगा उजला घर संसार।

फल आशा को त्याग कर्म पथ कदम बढ़ते जाएं।
संकट हो जितने भी लेकिन धीरज सबल पाए।
लक्ष्य सफल सब होंगे अपने बन अपना करतार।
खुशियों से आँगन महकेगा उजला घर संसार

रोग शोक का तम है फैला मानव है भयभीत।
दूषित अपना वास किया है। तोड़ी है सब रीत।
करता अपने हाथों ही क्यों फिर अपना संहार।

समय अभी भी जाग मुसाफिर जीवन है अनमोल।
झूठ दंभ पाखंडो में तू मत कर इसका तोल।
पावन रूप सरित सी निर्मल बहे प्रेम रसधार

संकल्पों का हाथ थाम कर हर लो सब की पीर।
सत कर्मों से रच देना एक सुंदर सी तस्वीर।
जप तप पुण्य साधना का हो इतना सा उपकार
खुशियों से आँगन महकेगा उजला घर संसार

खिल जाएँगे ज्योति सुमन सब दीप जले घर द्वार
खुशियों से आँगन महकेगा उजला घर संसार

भोर हुई

भोर हुई नभ की छवि न्यारी
कलरव गान लगे सुखकारी।

रवि का ओज प्राण हितकारी
कण कण धरती का बलिहारी।

अलसाई कलियाँ खिल आई
यौवन पर अपने इतराई।

ले मकरंद भृमर घर आए
पात पंकजा के सिहराये।

नदियाँ नीर भरी लहराई
रस भर झूमें वन अमराई।

सुखद प्रभाती वंदन गाये
ईश चरण में शीश झुकाये।।

दीप जलाओ

दीप जलाओ प्रेम के, मन मे रख विश्वास।
अंधकार मिट जाएगा, होगा धवल उजास।
होगा धवल उजास, पातकी भाव मिटाओ।
रोग रहे सब दूर, आस के दीप जलाओ।

दीप जलाओ मिल सभी, होगा तम का नाश।
अंतर में खुशियां सजे, जगमग दिव्य प्रकाश।
जगमग दिव्य प्रकाश, काल को दूर भगाओ।
पीड़ा होवे दूर, देहरी दीप जलाओ।

दीप जलाओ ज्ञान के, अंतर्मन उजियार।
स्पंदन हर रूप में, जड़ चेतन अविकार।
जड़ चेतन अविकार, समर्पण भाव जगाओ।
मन में भर विश्वास, नवल सब दीप जलाओ।

दीप जलाओ तुम सभी रात नो बजे आज।
माननीय विनती करें, दीप माल हो साज।
दीप माल हो साज, नया इतिहास बनाओ।
कोरोना हो दूर, सभी मिल दीप जलाओ।।

पीर सुनो बनवारी

डरना यह रोग बुरा
सबसे मत हाथ मिला वरना दुख भारी।
रहना अपने घर द्वार सभी
विपदा यह आन पड़ी अविकारी।
मुँह ढाप रखो अपना
मत बाहर पाँव रखो सुन बात हमारी।
लड़ना इससे अब है हमको
सब साथ चलो व्रत संयम धारी।1।

प्रभु से विनती करते कर जोड़
हरो यह पीर सुनो बनवारी।
करता यह प्राण प्रहार नही
विष से बचते जग के नर-नारी।
विपदा यह आज घिरी जग में
इसका हल कौन करे अवतारी।
मन संयम धार रहो घर में
यह एक उपाय बड़ा सुखकारी।।2।

आगे बढ़ते जाना

जग में ऊँचा नाम कमाना, आगे बढ़ते जाना।
कभी विफलता से घबराकर, आशा नही गवाना।

ध्येय नेक हो भला सभी का, मन से यही निभाना।
धर्म कर्म को जीवन में तुम, नही कभी बिसराना।

प्रेम भाव से मिलजुलकर तुम, सबको गले लगाना।
ऊँच-नीच का भेद भूलकर, जन जन को अपनाना।

दुख के अँधियारो में सुख के, नूतन दीप जलाना।
ज्ञान ज्योति की झील-मिल आभा, जीवन पथ बिखराना।

त्याग समर्पण में ही अपनी, खुशियो का सुख पाना।
हर जीवन खुशहाल रहे बस, इतना कर्ज चुकाना।।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

आरती डोंगरे

खरगोन (म.प्र.)

Email- smtarteedongre@gmail.com

Mobile - 9754705424

आपात काल और अंतरा शब्दशक्ति में सृजन ने एक ऐसा अवसर उपलब्ध करवाया जिसने मन के उद्‌गारों को पन्नो पर कुछ इस तरह उकेरने में सहायता की के एक पल तो उसी सृजन को देखकर मन अचंभित हो जाता है।

अंतरा में विभिन्न रचनाकारों का सृजन निरन्तर प्रोत्साहित करता है साथ ही अलग अलग विषयों पर सृजन एक निरंतरता देता है। साहित्य की यह एक अनुपम देन है जहाँ विभिन्न विधाओं में सृजन का अवसर प्राप्त होता है।

इस आपातकाल के दौरान सृजन को गति प्राप्त हुई एवम एक नया अनुभव मिला। मेरा सृजन इसका अनन्य उदाहरण है।

धन्यवाद

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला– बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331

संपर्क– 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-140-4

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/